जनतंत्र की रक्षा

और

अहिंसा के अनुसरण

के अभियान में शामिल होने

एक आव्हान

(बाबा साहेब अम्बेडकर और महात्मा गांधी
के सपनों के भारत को साकार करने)

26 से 30 जनवरी, 2018

भारतीय लोकतंत्र पर मंडराने वाले खतरे आज पहले से कहीं अधिक वास्तविक और भयावह हो गए हैं; और पूरे देश में हिंसक हमलों में बढोतरी आई है, ख़ास कर अल्पसंख्यकों, दलितों, आदिवासियों, बुद्धिजीवियों, लेखकों, मीडिया कर्मियों, कलाकारों, छात्रों और समुदाय विशेष के उन मुखियाओं पर जो सत्ताधारियों और उनके ललाट संगठनों के खिलाफ इमानदारी से असंतोष की आवाज़ उठाते हैं | सांप्रदायिक और कॉर्पोरेट शक्तियों द्वारा भारतीय संविधान की समीक्षा की बढती मांग भारत में एकतंत्र / निरंकुश राज्यशासन कायम करने के एजेंडा का एक हिस्सा है; ख़ास कर संविधान की उद्देशिका में निहित "समाजवाद" और "धर्मनिरपेक्षता" के सिद्धांतों को निकाल देने की मांग के पीछे भारतीय संविधान और प्रभुत्वसंपन्न गणराज्य के मौलिक चरित्र को ही बदल डालने का इरादा है, और उसकी जगह "हिन्दू राष्ट्र" के निर्माण का रास्ता साफ़ करना ही है |

जनतंत्र की स्थापित संस्थानों और प्रथाओं को कमज़ोर और अधिभावी करने वाली अभी हाल में ही घटित तमाम घटनाओं से यह स्पष्ट हो गया है कि जनतंत्र को नष्ट करना ही इनका एकमात्र उद्देश्य है | इनमें सबसे ताज़ा चेतावनी सर्वोच्च न्यायालय के चार वरिष्टतम न्यायाधीशों द्वारा 12 जनवरी 2018 को प्रेस सम्मेलन बुलाकर यह कहना कि भारत की शीर्ष अदालत में परिस्थिति "*सही तौर पर व्यवस्थित नहीं है*" ('not in order'), और कि कई "*वांछनीय से कम* "('less than desirable') घटनाएं घटित हुई हैं. इन चार न्यायाधीशों ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि इस संस्था को संरक्षित न किया गया तो ***"इस देश में जनतंत्र सुरक्षित नहीं रहेगा"***|

इसके कुछ दिन पहले, 9 जनवरी 2018 को हज़ारों की संख्या में देश भर से युवा और छात्र देश की राजधानी दिल्ली में ***"युवा हुंकार रैली"*** में एकजुट हुए | इसका नेत्रत्व दलित मुक्ति आन्दोलन के मुखिया और गुजरात में नव-निर्वाचित विधायक, जिग्नेश मेवानी, और जवाहर लाल विश्वविद्यालय के पूर्व व् वर्तमान छात्र नेतागण कन्हैया कुमार, शेहला रशीद और उमर खालिद आदि थे| इस रैली में ऐलान किया गया कि ***"हमारे संविधान पर खतरे मंडरा रहे हैं| हम केवल अपने संविधान की सुरक्षा करना चाहते हैं"***| रैली में असली मुद्दों के महत्त्व पर ज़ोर दिया गया जैसे कि भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोज़गारी, शिक्षा के अधिकार, जीविकोपार्जन और लिंग आधारित न्याय आदि, न कि फौरी मुद्दे जैसे कि 'घर वापसी', 'लव जेहाद' और 'गाय'; जो जनता का ध्यान असली मुद्दों से हटाने का काम करते हैं| जे.एन.यू. के छात्र संगठन के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार ने कहा कि ***"चाहें वे आपको कितना भी गुस्सा क्यों न दिलाएं, हिंसा का सहारा कतई ने लें | जब वे लाठी लेकर आप के पास आयें, तो अपनी पीठ को मज़बूत कर लें, एकजुट होकर खड़े हों लें यह न भूलें कि यह हिंसा का चक्र केवल प्रेम से ही पराजित किया जा सकता है|"***

फासीवादी और कॉर्पोरेट एजेंडा के खिलाफ इस विद्रोह को देश भर में जनतांत्रिक और शांतिपूर्ण जन-आंदोलनों के परिवेश में भी देखने-समझने की ज़रुरत है, जो मेहनतकश मजदूर-किसानों, आदिवासियों, दलितों, महिलाओं और छात्रों द्वारा अपने जीने, आज़ादी और जीविकोपार्जन के मौलिक अधिकारों को हासिल करने के लिए चलाये जा रहे हैं |

वर्तमान में जो हिंसा और दमन का दौर राज्य और गैर-राज्य के अधिनायकों और खलनायकों द्वारा आम नागरिकों पर आम तौर पर, और ख़ास कर पीड़ित और संघर्षशील जनता पर चलाया जा रहा है, उससे एक ऐसी परिस्थिति निर्मित हुई है जिसे भारत में **अघोषित आपातकाल** की संज्ञा दी जा रही है |

ऐसे परिवेश में, प्रतिरोध में जनता की एकजुट आवाज़ और शांतिपूर्ण संघर्ष ही फासीवादी और कॉर्पोरेट ताकतों के अपराधिक गठबंधन के खतरनाक और बेरहम राज के खात्मेकी दिशा में कारगर कदम है; केवल जन-शक्ति ही ऐसी शक्तियां के मंसूबों को परास्त कर सकती है जो भारत में सेक्युलर-समाजवादी-जनतांत्रिक समाज के ताने-बाने को तहस-नहस करने पर तुली हुई हैं| इतिहास और अनुभव ने हमें सिखाया है कि खतरों और चुनौतियों के ऐसे दौर में जन-विद्रोह और जन-आंदोलनों ने ही मौत और विनाश की शक्तियों को ललकारा है, और अन्ततोगत्वा पराजित किया है|

राष्ट्र-निर्माण में कलीसिया के योगदान की परंपरा को जारी रखते हुए, जिसके लिए हमें प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा से प्रेरणा प्राप्त होती है, और भारत के संविधान में निहित मूल्यों और सिद्धांतो के प्रति अपनी निष्ठा दर्शाते हुए हम,

भारतीय गणराज्य के स्वंतंत्र नागरिक होने के नाते

गणतंत्र दिवस (26 जनवरी)
और
शहादत दिवस (30 जनवरी)
को पर्व के रूप में मनाते हुए :

- भारतीय संविधान में निहित मौलिक सिद्धांतों की परिपुष्टि और संपोषण करें|
- देश के सेक्युलर-जनतांत्रिक ढांचे को मज़बूती देने, अहिंसक और शांतिपूर्ण तौर-तरीकों को अपनाते हुए अपनी कलीसियाओं, और साथ ही अन्य देशभक्त व्यक्तियों और संस्थानों को जागरूक और संवेदनशील बनाने का काम करें, और इस दिशा में कारगर कदम उठाने के उपाय खोजें |
- सामाजिक सक्रियता और सामाजिक न्याय से जोड़ कर विकास की दिशा में हम सभी एकजुट होकर काम करें और, इसके साथ ही समानता, आज़ादी और मानव गरिमा पर आधारित नए समाज की संरचना की दिशा में सामाजिक सक्रियता दर्शायें |
- अपने संसाधनों – वैचारिक और संस्थागत – का सही इस्तेमाल कर एक व्यापक जन-आधरित गठबंधन तैयार कर सांप्रदायिक और कॉर्पोरेट शक्तियों को परास्त करने, जनतंत्र को मज़बूत करने और संसदीय और अहिंसक तौर-तरीकों के माध्यम से शांति और न्याय को स्थापित करने की दिशा में कारगर कदम उठाएं |

इस दिशा में पहला कदम उठाते हुए, हमें प्रयास करना होगा कि

- शांति और न्याय स्थापित करने के लिए जन-मंच तैयार कर हमारे समाज के सेक्युलर-समाजवादी-जनतांत्रिक ताने-बाने पर मंडराने वाले खतरों और चुनौतियों को चिन्हित करे; राष्ट्रीय, सामजिक और धार्मिक पर्वों का सामूहिक उत्सव मनाने के लिए स्वस्थ्य एवं अनुकूल वातावरण निर्मित करें; और महान समाज सुधारकों के अभूतपूर्व योगदान को मान्यता देते हुए स्मरण करें, इनमें इस अवसर पर प्रासंगिक नेताओं जैसे कि बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर (जिन्हें भारतीय गणतंत्र का पिता की संज्ञा दी गयी है, क्योंकि भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने में उनकी विशेष भूमिका रही) और राष्ट्र पिता महात्मा गांधी (जिनके अहिंसा के सिद्धांत ने पूरे विश्व को प्रेरित किया)|

- सामाजिक तौर पर सुधारवादी आन्दोलन / अभियान को ढोस रूप प्रदान करते हुए उन अभिशाप से देश को आज़ाद करने का काम करें जैसे की गरीबी, निरक्षरता, भूख और भुखमरी, बीमारी और कुपोषण, बेरोज़गारी, हर तरह का भेद-भाव, सांप्रदायिक, जातिगत और जेंडर हिंसा और नफरत से, सामाजिक कुरीतियों से समाज और देश को मुक्ति दिलाने का काम करें जैसे कि नशा / शराब, बाल-विवाह, बाल-श्रम, महिला हिंसा,

दहेज़ प्रथा, छुआ-छूत, पुलिस अत्याचार और दमन, भ्रष्टाचार और भेद-भाव, अंधविश्वास, और सांप्रदायिक, जातिगत और लिंग आधारित हिंसा और नफरत आदि |

कार्यक्रम के लिए कुछ सुझाव

- भारतीय संविधान में निहित मूल्यों और सिद्धांतों को कायम रखने 26 जनवरी, 2018 को सभी आराधनालयों और मसीही संस्थानों में विशेष रूप से गणतंत्र दिवस मनाएं|
- जनतंत्र की सुरक्षा और अहिंसा के अनुसरण में 28 जनवरी, 2018 (रविवार) को विशेष रविवारीय आराधना रखें|
- अहिंसा के अध्यात्मिक पहलू को सशक्त करने के लिए शहादत दिवस 30 जनवरी 2018 को राष्ट्र पिता महात्मा गांधी को श्रदांजलि देते हुए किसी सार्वजानिक स्थल पर सामूहिक उपवास रखें|
- जवानों, छात्रों और सन्डे-स्कूल के बालक-बालिकाओं के लिए वाद-विवाद / निबंध/ पहेली प्रतियोग्यता का आयोजन करें, जिसमें भारत के संविधान में निहित सिद्धांतों और खासकर मौलिक अधिकारों की अहमियत पर और अहिंसा की जीवन शैली के रूप में प्रासंगिकता आदि विषयों को शामिल करें|